तीन दिवसीय बिरसा मुंडा भाषा एवं संस्कृति महोत्सव का आगाज, साहित्यिक सत्र में जनजातीय भाषाओं के विद्वान अपने विचार साझा करेंगे

जनजातीय नृत्य व संगीत की प्रस्तुति से गुलजार हुआ सीयूजे सभागार

रांची | प्रमुख संवाददाता

सेंट्रल यूनिवर्सिटी झारखंड (सीयूजे) के लुप्तप्राय भाषा केंद्र की ओर से आयोजित तीन दिवसीय बिरसा मुंडा भाषा एवं संस्कृति महोत्सव की शुरुआत सोमवार को हुई। मुख्य अतिथि राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग के अध्यक्ष नंद कुमार साहू ने इसका उद्घाटन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलपति डॉ नंद कुमार यादव इंदू ने की। नंद कुमार साहू ने जनजातीय संस्कृति की महत्ता पर जोर दिया। साथ ही, जनजातियों में शिक्षा को किस तरह बढ़ावा दिया जाए, इस पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय के लुप्तप्राय भाषा केंद्र को सुदृढ़ बनाने के लिए हरसंभव सहयोग दिया जाएगा। कुलपति डॉ नंद कुमार यादव इंदू ने कहा कि इस तीन दिवसीय महोत्सव में 32 जनजातियों का आगमन होगा और लोग उनके विभिन्न पहलुओं के बारे में जान सकेंगे।

सीयूजे में मंगलवार से शुरू हुए बिरसा मुंडा भाषा एवं संस्कृति महोत्सव के दौरान लोक नृत्य की प्रस्तुति देते विद्यार्थी।

मांदर और ढोल की थाप पर झूम उठे सभी

विद्यार्थियों की ओर से महोत्सव में जनजातीय नृत्य व संगीत की रंगारंग प्रस्तुति दी गई। पारंपरिक जनजातीय परिधानों में सजे-धजे विद्यार्थियों के नृत्य दल ने जब मांदर और ढोल की थाप पर लयबद्ध नृत्य प्रस्तुत किया तो सभी के पैर थिरकने लगे। सभागार तालियों से गूंज उठा। महोत्सव में जनजातीय विषयों पर पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। साथ ही, जनजातीय खान-पान की भी व्यवस्था की गई है। महोत्सव की संयोजक डॉ सीमा ममता मिंज ने कहा कि महोत्सव के दौरान साहित्यिक सत्र महत्वपूर्ण होंगे, जिनमें जनजातीय भाषाओं के विद्वान अपने विचार साझा करेंगे। साथ ही, झारखंड की कला प्रदर्शनी भी देखने को मिलेगी। महोत्सव में डॉ रोमा यादव समेत विश्वविद्यालय के सभी शिक्षकगण और छात्र-छात्राएं मौजूद थे।